पिता, पुत्र और आत्मा एक परमेश्वर है

जो बच्चों को सिखाते है उन्हें अध्ययन टी 5 बी पढ़ना चाहिये

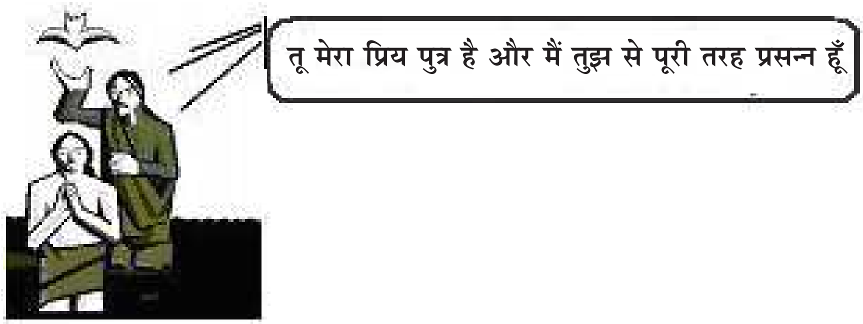

प्रार्थना: "प्रिय प्रभु, हमारी सहायता कर कि हम उसके मूल्य को समझ सके जो यीशु और उसके प्रेरितों ने सिखाया, कि स्वर्गीय पिता परमेश्वर है और ये कि परमेश्वर यीशु के रूप में आया और कि पवित्र आत्मा परमेश्वर की आत्मा है"।

नोट: केवल एक सच्चा परमेश्वर है जो पिता है (हमारा सृष्टिकर्ता), पुत्र है (यीशु हमारा छुड़ाने वाला) और आत्मा है (हमारा दैविय सहायक) वे एक परमेश्वर हैं। वे सृष्टि में और उद्धार में साथ साथ काम करते हैं, जैसा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु के बपतिस्मा के विषय रिपोर्ट किया।

1. त्रिएकता को सिखाने के लिये प्रार्थना और वचन से तैयारी करो।

प्रेरित 9:1-19 में खोजें पौलुस जिसने मसीहियों से घृणा किया जाना कि यीशु परमेश्वर है, और कैसे पौलुस ने पवित्र आत्मा के विषय नई समझ पाई (पद 17 में)

यूहन्ना 14:23-26 में खोजें यीशु ने पिता पवित्र आत्मा और स्वयं के विषय में क्या कहा।

यूहन्ना 5:19-30 में खोजें जब हम पुत्र को आदर देते है तो किस को आदर देते हैं, और ये ऐसा क्यों है।

पता करें कि पिता पुत्र और आत्मा साथ साथ हम में क्या करते हैं या वे हमें करने योग्य बनाते हैं इन हिस्सों में रोमियों: 1:1-4; 5:1-5; 7:4-6; 8:1-4; 8:6-11; 8:16-17; 8:26-39; 14:14-18 और 15:30-33.

नोट: नये नियम ने त्रिएकता को कोई तरीको से वर्णन किया है:

पिता, पुत्र एवं आत्मा सृष्टिकर्ता एवं छुड़ानेवाला एवं शुद्ध करने वाला;

परमेश्वर एवं प्रभु एवं पवित्र आत्मा; राजा एवं मसीहा एवं शिक्षक

इन महत्वपूर्ण सत्यों को स्मर्ण रखें

- त्रिएकता अनन्त परमेश्वर है और भौतिक संसार से उसके समय और स्थान से ऊपर है।
- समय के अन्दर (यीशु का जन्म) परमेश्वर मानव बन गया और एक स्थान में (बैतलेहेम में)
- यीशु मनुष्य रूप में जन्मा। उसने दोनों मानव निर्बलता और दैविय सामर्थ दिखाई।
- कुछ कलीसियाएं सिखाती हैं कि यीशु की दैविय और मानव व्यवहार एक ही व्यतित्व में आया, दूसरे ये सिखाते हैं कि दैविय और मानव स्वभाव अलग अलग हैं। क्या जानना महत्वपूर्ण है और विश्वास करना है कि यीशु परमेश्वर और मानव दोनो है।

अपने स्वंय को जांचें: यीशु और नये नियम के अनुसार कौनसा विचार सही है?

- यीशु वह काम करता जो केवल परमेश्वर कर सकता है।

- यीशु पिता से बोलता है और पिता ने यीशु से बातें की।
- यीशु हमारे लिये पवित्र आत्मा भेजता है और यीशु हमारे पास आत्मा के रूप में आता है।
- जब हम यीशु को आदर देते तो, हम परमेश्वर को आदर देते हैं।
- हम पिता, पुत्र और आत्मा से प्रार्थना कर सकते हैं। *(उत्तर: ये सभी विचार सत्य हैं)*

अथेनेसियुस और ऐरियस

चौथी सदी के दो मिस्त्र के धार्मिक शिक्षकों में तर्क हुआ कि यीशु कौन था। ऐरियस ने त्रिएकता का इन्कार किया और परमेश्वर की एकता पर जोर दिया। उसने ये कहा कि परमेश्वर का वचन यीशु पर उसके बपतिस्में के समय आया, जिसने उसे मसीह बनाया, जिसे "परमेश्वर का पुत्र" कहा गया। उसकी ये शिक्षा रोमी साम्राज्य में विस्तार से फैली।

अथेनेसियुस ने सिखाया कि परमेश्वर का पुत्र जीवित वचन है जो पिता के साथ था इससे पहले कि यीशु का जन्म हुआ और बपतिस्मा हुआ, और कि एक परमेश्वर अनन्त है और वे दो पिता और पुत्र है। तब उसने देखा कि पवित्र आत्मा भी परमेश्वर है और सिखाया कि एक अनन्त परमेश्वर तीन है, पिता, पुत्र और आत्मा।

325 ई. पश्चात् राज्य की कलीसिया निसिया में मिली और उनमें से अधिकतर ने शरियस की विचार धारा की अपेक्षा अथेने सियुस की शिक्षा को अधिक बाइबल आधारित पाया। इस प्रकार उन्होंने अथेने सियुस की त्रिएकता की शिक्षा को सहमति दे दी। आज अधिकतर मसीही त्रिएकता को सत्य स्वीकार करते हैं। वे जो इसका इन्कार करते है वे ऐरियन्स कहलाते हैं।

कुछ धर्म यीशु को परमेश्वर कर सम्मान देने में इन्कार करते हैं। यहोवा साक्षी इन्कार करते हैं कि यीशु परमेश्वर था और कि वह अपनी देह में पुन: जीवित हो गया। मोरमोन कहते हैं कि यीशु मरने के बाद परमेश्वर हो गया और कि मोरमोन ईश्वर बन जायेंगे। इस्लाम ये सिखाता है कि यीशु कभी ईश्वर नहीं था और न ही वह मरा न जी उठा। इनमें से कोई पुत्र को आदर नहीं देता जिस प्रकार बाइबल आज्ञा देती हैं, जैसा आदर हम पिता को देते हैं (यूहन्ना 5:19-30)

2. अपने सह कर्मियों के साथ आने वाले सप्ताह की गतिविधियों की योजना बनायें।

यदि आपके झुण्ड में विश्वासियों को त्रिएकता को समझने में परेशानी है या छुठे शिक्षकों द्वारा गड़बड़ी में हैं, तो उनसे भेंट करें और इन सत्यों को बतायें:

- यीशु अन्तत: परमेश्वर का पुत्र है, मानव बन गया, और सर्वदा मानव या परमेश्वर रहेगा।
- त्रिएकता, तीन परमेश्वर नहीं है, ये एक परमेश्वर जो पिता, पुत्र और आत्मा है।
- परमेश्वर एक है और तीन व्यक्ति भी है। ये एक रहस्य है जिसे कोई मानव वर्णन नहीं कर सकता। हम उसमें नहीं जोड़ते, मानो वे अलग व्यक्ति हैं; वे एक जुड़े हुए है।
- यीशु अनन्त परमेश्वर है और वह मानव बन गया। वह ईश्वर और मानव दोनो हैं। ये कहना झूठ होगा कि यीशु केवल मानव था और मसीह आत्मा था जो यीशु में होने परमेश्वर द्वारा भेजा गया था।
- पिता और पुत्र आपस में बातचीत करते हैं और अनन्त तक सहयोग करते हैं। जब पुत्र मानव बन गया, तो वह और पिता लगातार संचार करते और सहयोग करते रहे। इस प्रकार ये कहना गलत होगा कि यदि यीशु परमेश्वर था तो उसे पिता से प्रार्थना नहीं करना था।
- शब्द "त्रिएकता" बाइबल में नहीं पाया जाता। हम इसे ये बताने में इस्तेमाल करते हैं जो हम बाइबल में पाते हैं, जो पिता, पुत्र और आत्मा की एकता है। ये कहना भी गलत है कि त्रिएकता रोमन कैथोलिक अविष्कार किया।

दूसरे झुण्ड के चरवाहों से मिलें जो अगुवों को प्रशिक्षित करते हैं, और इन सत्यों को जानने में सहायता करते हैं।

3. **अपने सह-कर्मियों के साथ अगली आराधना की योजना बनायें।**

उन गतिविधियों को करें जो हाल की ज़रूरत में सही बैठती हैं

- **प्रेरित 9:1-19** को पढ़ें या कहानी बतायें कि किस प्रकार शाऊल ने जाना कि यीशु परमेश्वर है और किस प्रकार उसने पवित्र आत्मा के प्रति नई समझ प्राप्त की (पद 17)
- **रोमियो 1:1-7** पढ़ें और वर्णन करें कि कैसे त्रिएकता हमारे उद्धार में सलग्न हैं हमारी पवित्रता में यीशु के लिये हमारी गवाही में, और हर चीज़ जो हम परमेश्वर के लिये करते हैं।
- आपने भाग 1 में क्या सीखा वह बयान करें और वहीं प्रश्न पूछें।
- बच्चों ने जो तैयार किया है उसे बड़ों के लिये प्रस्तुत करने दें।
- अथेने सियुस और ऐरियस की कहानी बतायें।
- विश्वासियों को गवाही देने दें कि उन्होंने कैसे पहले पहचाना हि यीशु परमेश्वर है।
- **प्रभु भोज** लागू करने के लिये मत्ती 3:13-17 पढ़ियें। ये बतायें कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर आत्मा प्रभु भोज में साथ कार्य करते हैं जैसा उन्होंने यीशु के बपतिस्में में किया। पिता की आज्ञा थी कि पाप ढांपने के लिये रक्त बहाया जायें, पुत्र ने अपना रक्त बहाया, पवित्र आत्मा हमें जब हम रोटी लेते और प्याले से पीते हैं तो हमें यीशु और उसके रक्त में भागी करता है (1 कुरिन्थी 10:16-17)
- दो या तीन के छोटे झुण्ड से प्रार्थना करें, गतिविधि की योजना की पुष्टि करें और एक दूसरे को प्रोत्साहित करें।
- मत्ती 3:16-17 साथ साथ **कंठस्त करें।**